IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"भगवतीचरण वर्मा के 'चित्रलेखा' में स्त्री-अस्मिता और नारी-स्वायत्तता : एक आलोचनात्मक अध्ययन"

(डॉ. श्रीजा बी. आर [1], एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, एम जी कॉलेज, तिरुवनंतपुरम, केरल विश्वविद्यालय से सम्बद्ध)

Abstract: **भगवतीचरण वर्मा का उपन्यास *'चित्रलेखा'* हिंदी साहित्य की उन महत्वपूर्ण कृतियों में है, जिसमें पाप-पुण्य, नैतिकता और मानवीय संबंधों के साथ-साथ स्त्री-अस्तित्व के प्रश्नों का भी गंभीर चित्रण मिलता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उपन्यास में निहित स्त्रीपक्ष का विश्लेषण करना है। चित्रलेखा केवल सौंदर्य और आकर्षण की प्रतिमूर्ति नहीं, बल्कि आत्मसम्मान, विवेक और स्वतंत्र निर्णय-क्षमता से संपन्न एक सशक्त स्त्री है। जीवन की विविध परिस्थितियों–विधवापन, प्रेम, सामाजिक उपेक्षा और संघर्ष–का सामना करते हुए वह अपनी अस्मिता को बनाए रखती है। उपन्यास में बीजगुप्त और कुमारगिरि के माध्यम से स्त्री के प्रति पुरुष-मानसिकता के दो भिन्न रूप सामने आते हैं, किंतु चित्रलेखा स्वयं को किसी की संपत्ति या भोग-वस्तु के रूप में स्वीकार नहीं करती। उसका व्यक्तित्व प्रेम, आत्मनिर्णय और स्वाभिमान के मूल्यों पर आधारित है। इस प्रकार वह पारंपरिक सामाजिक मान्यताओं को चुनौती देती हुई दिखाई देती है।यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि भगवतीचरण वर्मा ने चित्रलेखा के माध्यम से स्त्री को एक स्वतंत्र और विचारशील व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया है। इसलिए *'चित्रलेखा'* केवल दार्शनिक उपन्यास नहीं, बल्कि हिंदी साहित्य में स्त्री-चेतना और नारी-अस्मिता के महत्वपूर्ण विमर्शों को अभिव्यक्त करने वाली एक उल्लेखनीय कृति भी है।**

Index Terms - **चित्रलेखा, भगवतीचरण वर्मा, स्त्री-अस्मिता, नारी-चेतना, स्त्री-स्वायत्तता, आत्मसम्मान, हिंदी उपन्यास।**

प्रस्तावना

हिंदी उपन्यास परंपरा में भगवतीचरण वर्मा का विशिष्ट स्थान है। उन्होंने अपने साहित्य में मानवीय जीवन की जटिलताओं, नैतिक द्वंद्वों तथा सामाजिक मूल्यों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उनका प्रसिद्ध उपन्यास *'चित्रलेखा'* (1934) सामान्यतः पाप और पुण्य के दार्शनिक विमर्श के लिए चर्चित रहा है, किंतु इसके भीतर स्त्री-अस्तित्व, नारी-स्वायत्तता और लैंगिक संबंधों के अनेक महत्वपूर्ण प्रश्न भी निहित हैं। यह उपन्यास उस समय लिखा गया था जब भारतीय समाज परंपरागत नैतिक मान्यताओं और आधुनिक चेतना के मध्य संक्रमण के दौर से गुजर रहा था।

उपन्यास की नायिका चित्रलेखा केवल कथा की केंद्रीय पात्र नहीं है, बल्कि वह सामाजिक रूढ़ियों और पितृसत्तात्मक मूल्यों को चुनौती देने वाली एक सशक्त स्त्री-चेतना का प्रतिनिधित्व करती है। उसके जीवन की परिस्थितियाँ, संघर्ष और निर्णय यह संकेत देते हैं कि स्त्री का अस्तित्व केवल सामाजिक मान्यताओं द्वारा निर्धारित नहीं होता, बल्कि उसकी अपनी चेतना, अनुभव और निर्णय-क्षमता भी उसके

व्यक्तित्व का निर्माण करती है। इस दृष्टि से *'चित्रलेखा'* को स्त्री-विमर्श की पूर्वपीठिका के रूप में भी देखा जा सकता है।

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य उपन्यास में चित्रित स्त्रीपक्ष का विश्लेषण करते हुए यह समझना है कि भगवतीचरण वर्मा ने चित्रलेखा के चरित्र के माध्यम से स्त्री की स्वतंत्र पहचान, आत्मसम्मान और वैचारिक स्वायत्तता को किस प्रकार अभिव्यक्त किया है।

'चित्रलेखा' में स्त्री-अस्मिता और नारी-स्वायत्तता

चित्रलेखा का स्त्री-विमर्श प्रत्यक्ष रूप से किसी वैचारिक नारीवादी आंदोलन से संबद्ध नहीं है, फिर भी इसमें स्त्री की स्वतंत्र सत्ता को स्वीकार करने की स्पष्ट प्रवृत्ति दिखाई देती है। चित्रलेखा का जीवन अनेक सामाजिक और व्यक्तिगत संकटों से गुजरता है, किंतु वह प्रत्येक परिस्थिति में अपने व्यक्तित्व की गरिमा को बनाए रखती है। विधवा होने के बाद सामाजिक उपेक्षा और असुरक्षा का सामना करने के बावजूद वह परिस्थितियों के सामने आत्मसमर्पण नहीं करती। यह उसकी आंतरिक शक्ति और आत्मविश्वास का परिचायक है।

उपन्यास में बीजगुप्त और कुमारगिरि दो भिन्न पुरुष दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। बीजगुप्त भोगवादी जीवन-दृष्टि का प्रतीक है, जबकि कुमारगिरि आध्यात्मिकता और वैराग्य के आवरण में छिपे अहंकार और दमनकारी मानसिकता का प्रतिनिधित्व करता है। दोनों ही किसी न किसी रूप में चित्रलेखा को अपने दृष्टिकोण से परिभाषित करना चाहते हैं, किंतु चित्रलेखा स्वयं को किसी की वस्तु अथवा अधिकार-क्षेत्र के रूप में स्वीकार नहीं करती।

कुमारगिरि के प्रति उसका प्रतिरोध विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वह प्रेम और वासना के अंतर को स्पष्ट करते हुए कहती है—"प्रेम बलिदान है, आत्मत्याग है, ममत्व का विस्मरण है।" यह कथन केवल व्यक्तिगत प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि स्त्री की वैचारिक परिपक्वता और नैतिक दृष्टि का प्रमाण है। इसी प्रकार उसका कथन—"यहाँ मैं स्वामिनी हूँ, तुम दास हो"—पारंपरिक लैंगिक सत्ता-संबंधों को उलट देता है और स्त्री की आत्मनिर्भर पहचान को स्थापित करता है।

उपन्यास की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि चित्रलेखा को लेखक ने दया, करुणा या त्याग की पारंपरिक प्रतिमा के रूप में प्रस्तुत नहीं किया है। वह अपनी इच्छाओं, निर्णयों और विचारों वाली एक जीवंत मानवीय सत्ता है। इसी कारण उसका चरित्र आज भी स्त्री-अस्मिता और स्वायत्तता के विमर्श में प्रासंगिक बना हुआ है।

निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि *'चित्रलेखा'* केवल पाप और पुण्य की दार्शनिक व्याख्या तक सीमित उपन्यास नहीं है, बल्कि यह स्त्री-अस्तित्व और नारी-स्वायत्तता के प्रश्नों को भी गंभीरता से संबोधित करता है। चित्रलेखा का चरित्र सामाजिक रूढ़ियों, नैतिक बंधनों और पितृसत्तात्मक दृष्टिकोणों के बीच अपनी स्वतंत्र पहचान निर्मित करता है। वह आत्मसम्मान, विवेक और निर्णय-क्षमता से संपन्न ऐसी स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है जो परिस्थितियों की शिकार बनने के बजाय उनका सामना करती है।

भगवतीचरण वर्मा ने चित्रलेखा के माध्यम से यह स्थापित किया है कि स्त्री केवल पुरुष-केंद्रित सामाजिक संरचना का निष्क्रिय अंग नहीं, बल्कि स्वतंत्र विचार और व्यक्तित्व वाली सक्रिय मानवीय सत्ता है। इस दृष्टि से *'चित्रलेखा'* हिंदी साहित्य में स्त्री-चेतना और नारी-अस्मिता के विकास की एक महत्वपूर्ण कृति

सिद्ध होती है। समकालीन स्त्री-विमर्श के संदर्भ में भी इसकी प्रासंगिकता बनी हुई है, क्योंकि यह स्त्री की स्वतंत्र पहचान और उसके आत्मनिर्णय के अधिकार को साहित्यिक आधार प्रदान करती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. भगवतीचरण वर्मा -चित्रलेखा-पृ 190
2. भगवतीचरण वर्मा -चित्रलेखा- पृ 172
3. भगवतीचरण वर्मा -चित्रलेखा पृ-146
4. भगवतीचरण वर्मा -चित्रलेखा पृ-85.

सहायक ग्रन्थ

1. वर्मा, भगवतीचरण. *चित्रलेखा*. इलाहाबाद: भारती भंडार, 1934.
2. सिंह, नामवर. *इतिहास और आलोचना*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2009.
3. शर्मा, रामविलास. *साहित्य और समाज*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2008.
4. Beauvoir, Simone de. *The Second Sex*. New York: Vintage Books, 2011.
5. पांडेय, मैनेजर. *साहित्य और इतिहास दृष्टि*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2010.
6. Butler, Judith. *Gender Trouble*. New York: Routledge, 1990.
7. Millett, Kate. *Sexual Politics*. Urbana: University of Illinois Press, 2000.